आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711
पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 5 अंक : 9 मई-2018 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. बी. आर. छीपा

कुलपति सन्देश

किसान और पशुपालन के समग्र विकास को समर्पित राजुवास

प्रो. बी.आर. छीपा

प्रिय, किसान एवं पशुपालक भाइयों और बहनों !

राम–राम सा ।

राज्य का पहला एक मात्र वेटरनरी विश्वविद्यालय दिन प्रतिदिन पशुचिकित्सा और किसान–पशुपालकों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध होकर आगे बढ़ रहा है। हाल ही में भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने देश के उच्च शिक्षण संस्थानों के लिए निर्धारित केटेगरी में प्रदर्शन के आधार पर दी गई रैंकिंग में विश्वविद्यालय देश के समस्त विश्वविद्यालयों में अखिल भारतीय स्तर पर 101–150 वीं रैंक सूची में शामिल हुआ है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों, शिक्षकों और छात्र–छात्राओं ने शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार शिक्षा के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय उपलब्धियां अर्जित की हैं। राज्य सरकार द्वारा हाल ही में राजस्थान सूचना प्रौद्योगिकी दिवस – 2018 के अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय को संस्थानिक ई– गर्वनेन्स के लिए श्रेष्ठ कार्यों के उपरांत ई–गर्वनेन्स राजस्थान अवार्ड से नवाजा है, जो इस बात का द्योतक है कि सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग कर ई–शासन की सुदृढ़ता के लिए समर्पण और प्रतिबद्धता से यहां कार्य हो रहा है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने देशी नस्ल की गाय में भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक का उपयोग और विदेशी नस्ल के श्वानों में कृत्रिम प्रजनन करवा कर सफलताएं अर्जित की हैं। यहां के विद्यार्थियों ने 23वीं राष्ट्रीय किक बॉक्सिंग चैम्पियनशिप और एन.सी.सी. घुड़सवारी कैडेट्स ने गणतन्त्र दिवस – 2017 की परेड सहित अन्य प्रतियोगिताओं में पदक हासिल कर हमें गौरवान्वित किया है। जिलों में गांव–ढाणी तक प्रसार शिक्षा के विस्तार कार्यों के लिए 13 जिलों में वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण और अनुसंधान केन्द्र कार्यशील हैं। राज्य सरकार के सहयोग से अन्य जिलों में भी इनकी स्थापना की कार्यवाही चल रही है। किसान और पशुपालकों के समग्र कल्याण और उनकी आय को दोगुना करने के लक्ष्य के प्रति हम संकल्पबद्ध होकर आगे बढ़ रहे हैं।

जय हिन्द ।

(प्रो. बी. आर. छीपा)

कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा की अध्यक्षता में कुलपति सचिवालय में आयोजित राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (राजुवास) की बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट (बोम) की 19वीं बैठक

मुख्य समाचार

विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में राजुवास फिर शीर्ष पर

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा हाल ही में जारी विश्वविद्यालयों की इन्डिया रैंकिंग 2018 में राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय देश में शीर्ष और राजस्थान राज्य में कृषि विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में प्रथम स्थान पर रहा है। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा की गई रैंकिंग में इस बार वेटरनरी विश्वविद्यालय ने देश के 3954 संस्थानों/विश्वविद्यालयों में से 150 में अपनी जगह बनाई है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा सर्वे के लिए निर्धारित विस्तृत पेरामीटर के आधार पर राजुवास ने शीर्षस्थ स्थान हासिल किया है। देश के उच्च शिक्षण संस्थानों के लिए निर्धारित केटेगरी में प्रदर्शन आधार पर की गई रैंकिंग में राजस्थान राज्य के सभी 25 राजकीय विश्वविद्यालयों और 42 निजी विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रथम पांच में शामिल रहा है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा ने बताया कि इस सर्वे के अनुसार देश के पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में भी राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रथम पांच में रहा है। राजुवास को देश के कृषि विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में पहले 5 स्थान पर रहने का गौरव प्राप्त हुआ है। भारत सरकार के तत्वावधान में की गई इस रैंकिंग में देश की विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों से 4 मानदण्डों के आधार पर एकत्रित आंकडों के आधार पर इसकी घोषणा केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर द्वारा की गई है। कुलपति प्रो. छीपा ने टीम राजुवास की मेहनत, लगन और निष्ठा के कारण मिली इस उपलब्धि के लिए उन्हें बधाई दी है।

बोम की 19वीं बैठक संपन्न

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (राजुवास) की बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट (बोम) की 19वीं बैठक 20 अप्रेल को कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा की अध्यक्षता में कुलपति सचिवालय में आयोजित की गई। इस अवसर पर कुलपति प्रो. छीपा ने कहा कि विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों को स्तरीय शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध करवाना विश्वविद्यालय प्रबंधन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। विश्वविद्यालय द्वारा गत सात वर्षों में सफलता के अनेक सौपान तय किए गए हैं। इस परम्परा की निरंतरता बनाए रखना हमारा सामूहिक दायित्व है। बैठक के दौरान विश्वविद्यालय के नए कुलपति चयन से संबंधित विश्वविद्यालय स्तर की प्रक्रिया पूर्ण कर ली गई। बैठक में ट्रांसक्रिप्ट शुल्क का निर्धारण किया गया। बोम की सहमति के आधार पर ट्रांसक्रिप्ट शुल्क 15 सौ रुपये किया जाना तय हुआ। डिग्रियों की अशुद्धियों को दूर करने के लिए बोम द्वारा कुलपति को अधिकृत किया गया और कर्मचारियों के 'शैक्षणिक भ्रमण' की स्वीकृति भी दी गई। इससे विश्वविद्यालय के कार्मिक दूसरे शैक्षणिक संस्थानों का भ्रमण करते हुए वहां की खूबियों का अवलोकन तथा विश्वविद्यालय में इनके क्रियान्वयन से संबंधित सुझाव दे सकेंगे। कर्मचारियों के हित का ध्यान रखते हुए बोम द्वारा विश्वविद्यालय के कार्मिकों को सरकारी अस्पतालों के अलावा राज्य सरकार द्वारा अधिसूचित निजी चिकित्सालयों में भी निःशुल्क चिकित्सा सुविधा दिए जाने का निर्णय लिया। इस निर्णय से कार्मिक अब सरकारी अस्पतालों के साथ ही राज्य भर के अधिसूचित निजी अस्पतालों से भी इलाज करवा सकेंगे। कुलसचिव डॉ. हेमंत दाधीच ने बैठक के एजेंडे के अनुसार विभिन्न बिंदू रखे। बैठक में विश्वविद्यालय के अधिकारी मौजूद रहे। राज्य सरकार द्वारा नामित सदस्य, प्रगतिशील किसान पंकज मीणा, प्रगतिशील पशुपालक सुरेश चंद गुर्जर, समाजसेवी मंजू दीक्षित तथा कुलाधिपति एवं राज्यपाल द्वारा नामित प्रतिनिधि एवं केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ के प्रोफेसर हैड कमल जायसवाल भी मौजूद थे। वित्त सचिव प्रतिनिधि के रूप में अतिरिक्त संभागीय आयुक्त नरेन्द्र सिंह पुरोहित, निदेशक प्रतिनिधि के रूप में डॉ. रणजीत सिंह मौजूद थे। अंत में अधिष्ठाता तथा संकाय अध्यक्ष प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने सभी आगंतुकों का आभार जताया।

वर्ल्ड वेटरनरी डेः विजेताओं को पुरस्कार

पशुधन उत्पादों की गुणवत्ता और शुद्धता जांच की सरल विधियां आमजन तक पहुँचेः कुलपति प्रो. छीपा

वेटरनरी विश्वविद्यालय में "स्थाई विकास के लिए लोगों की आजीविका बढ़ाने, खाद्य सुरक्षा और संरक्षा" में पशुचिकित्सा व्यवसाय की भूमिका" थीम पर "विश्व पशुचिकित्सा दिवस" 29 अप्रेल को समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा ने इस दिवस पर आयोजित वेटरनरी छात्र–छात्राओं की भाषण, क्विज और पोस्टर

प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया। समारोह को सम्बोधित करते हुए कुलपति प्रो. छीपा ने इस महान दिवस पर पशुचिकित्सकों और छात्र–छात्राओं को बधाई देते हुए कहा कि पशुचिकित्सा में शोधार्थियों, वैज्ञानिकों और चिकित्सकों ने अनूठी उपलब्धियां अर्जित की हैं। पशुओं से प्राप्त होने वाले आहार और उप उत्पादों की गुणवत्ता और शुद्धता की चुनौतियां हमारे सामने हैं। उन्होंने वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि इन उत्पादों की शुद्धता जांच की छोटी विधियां आमजन तक पहुँचाने की जरूरत है। उन्होंने युवा छात्र–छात्राओं को सैद्धांतिक कार्यों के साथ–साथ प्रायोगिक कार्यों में भी दक्षता हासिल करने का आह्वान किया। प्रो. छीपा ने कहा कि पशु स्वस्थ होगा तो सभी स्वस्थ होंगे। देशी पशुओं की अद्बुत उत्पादन क्षमता को वैज्ञानिक तौर–तरीकों से बढ़ाए जाने की अच्छी संभावनाएं हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. हेमंत दाधीच ने स्वागत भाषण में विश्व पशुचिकित्सा दिवस के उद्देश्यों की जानकारी देते हुए कहा कि प्रति वर्ष होने वाले पांच संक्रमण रोगों में से एक जूनोटिक

रोग होता है अतः पशुचिकित्सा व्यवसाइयों का समाज के प्रति भी उत्तरदायित्व है। पशुपालन और उसके उत्पादों का वैश्विक बाजार उपलब्ध है और विश्व के 20.5 मिलियन लोग पशुधन सेक्टर पर निर्भर हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि उत्पादन पर विपरीत प्रभाव के चलते घरेलू आय में वृद्धि, गरीबी उन्मूलन, भूमि की उर्वरकता बनाए रखने जैसे कार्यो में पशुधन हमारा विश्वसनीय साथी बना रहेगा। राजुवास के पी.एम.ई. निदेशक प्रो. राकेश राव ने भी अपने विचार व्यक्त किए। राजुवास के सहायक प्राध्यापक डॉ. अशोक गौड़ ने विश्व पशुचिकित्सा दिवस–2018 की थीम पर पावर प्रजेन्टेशन द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया। राजुवास के निदेशक क्लिनिक्स प्रो. जे.एस. मेहता ने सभी का आभार जताया।

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 12, 21, 24, 26, 27 एवं 28 अप्रेल को गांव सोमासी, देपालसर, गोमटिया, गिनड़ी पट्टा, आसपालसर बड़ा एवं खेजड़ा उतरादा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 207 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 12, 20, 21, 26 एवं 28 अप्रेल को गांव सुदंरपुरा, हरदासवाली, देदासपुरा, कोठा–पकी एवं ठकरावाली गांवो में तथा 16 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 24 महिला पशुपालकों सहित 210 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा 226 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 11, 13, 16, 19, 21, 25 एवं 27 अप्रेल को गांव दोलपुरा, कुण्डाल, कारोली, बालदा, कालाबोर, आदर्श एवं आपरी खेड़ा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 226 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 12, 13, 16, 23, 24 एवं 25 अप्रेल को गांव बल्डू, रताऊ, तोनाणा, सांजुकला, आंगुता एवं बुड़ोद गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 182 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 6, 9, 11, 16, 23 एवं 27 अप्रेल को गांव खवास, निमेडा, तेलाडा, जालिया–II, पुष्कर एवं डूमाडा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 231 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 11, 12, 16, 17, 19 एवं 21 अप्रेल को गांव रामगढ़, मुंगेर, ओरा, दौलपुरा, घाटरा एवं निहालपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 263 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 4, 9, 10, 12, 13, 17, 19, 20, 24 एवं 26 अप्रेल को गांव थैरावर, गोथरा, चुल्हेरा, तुहिया, वहज, सहना, दुनावल, लखनपुर, गगवाना, नीमली एवं नगला मैथना गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 13 महिला पशुपालक सहित कुल 145 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण सम्पन्न

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 19, 20, 21, 23, 24, 25 एवं 28 अप्रेल को गांव गैरोली, मीरनगर, दूनी, सांखना, खानपुरा, नयागांव एवं बम्बोर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 187 पशुपालकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 12, 16, 20, 25 एवं 26 अप्रेल को गांव 11 एम.के.डी., कुजती, ऊंचाईडा, लक्ष्मीनारायणसर एवं मिठड़िया गांवों में तथा दिनांक 28 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 214 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी कोटा द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 16, 20, 21, 23, 24, 25 एवं 26 अप्रेल को गांव पोलाई खुर्द, प्रेमपुरा, सुरेला, जालीमपुरा, खेडली काल्या, उना एवं अरल्या जागीर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 214 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 6, 7, 13, 16, 19 एवं 21 अप्रेल को गांव रामपुरा, भील घाटी, पंचतोली, पाटनिया, बडोली माधोसिक एवं सांड गांवों में तथा दिनांक 10, 17, 20 एवं 24 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 207 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा 356 पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 17, 19, 20, 21, 24, 25, 26 एवं 27 अप्रेल को गांव जहानपुर, बरेह, बगचोली लोधा, बसैया, कासगंज, बाले का नगला, राडोली एवं सरकाना गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 356 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, जोधपुर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 23, 24, 25 एवं 26 अप्रेल को गांव पालड़ी पंवारा, पालड़ी मांगलिया, माणकलाव एवं पालड़ी खिंचियान गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 137 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वर्तमान में प्रतिजैविक औषधी प्रतिरोधकता की विकट समस्या

एंटीबॉयोटिक दवाइयां एक सूक्ष्मजीव से प्राप्त होती हैं और अन्य सूक्ष्मजीवी जैसे जीवाणु, विषाणु के विरूद्ध उपयोग में भी जाती है। एंटीबॉयोटिक दवाइयां निश्चय ही लाभदायक हैं और इनकी खोज चिकित्सा जगत में एक क्रांति की तरह उभर कर आई है। एंटीबॉयोटिक दवाइयां के उपयोग से कई घातक और लाइलाज बीमारियों का उपचार संभव हो पाया है। इन दवाइयां के उपयोग से शल्य चिकित्सा भी पहले से ज्यादा सुरक्षित हो गयी है। वर्तमान में विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए कई चिकित्सक बड़ी ही उदारता से प्रतिजैविक दवाइयां (एंटीबायोटिक्स) जैसे पेनिसिलिन, टेट्रासाइक्लिन, सल्फोनामाइड का उपयोग कर रहे हैं। इन दवाईयों की अमुक बीमारी में उपयोगिता और इसके जीवाणु के प्रति संवेदनशीलता का सही ज्ञान होना जरूरी है। एक रिपोर्ट के अनुसार लगभग 80 प्रतिशत प्रतिजैविक दवाइयां (एंटीबायोटिक्स) पशुओं में अनावश्यक रूप से उपयोग हो रही हैं। अनावश्यक और दुरूपयोग के कई बुरे नतीजे भी सामने आ रहे हैं खासतौर पर जीवाणु और अन्य सूक्ष्म जीवों में इन औषधियों के विरूद्ध प्रतिरोध पैदा हो जाता है और इससे उस एंटीबायोटिक का असर कम हो जाता है जिसे विज्ञान की भाषा में **''एंटीबॉयोटिक ड्रग रेजिस्टेंस''** कहते हैं जो कि वर्तमान में चिकित्सा जगत की बहुत बड़ी समस्या है। इसका सीधा दुष्परिणाम हमारे पशुओं पर, किसान भाईयों के स्वास्थ्य एवं उनकी आर्थिक स्थिति व देश के पशुधन उत्पादन पर हो रहा है।

प्रतिजैविक औषधी प्रतिरोधकता के संभावित कारण

- पशुओं और मनुष्यों में प्रतिजैविक दवाइयों के अधिक एवं अनियमित उपयोग।
- बिना चिकित्सक की सलाह एवं परामर्श के पशुओं और मनुष्यों में प्रतिजैविक दवाइयों के उपयोग।
- किसी बीमारी के ना होने की स्थिति में इनके उपयोग।
- बिना पर्ची के प्रतिजैविक दवाइयों का उपयोग।
- दवाइयों का उचित मात्रा एवं उचित समय पर उपयोग नहीं करना।
- पशुओं में टीकाकरण ना करवाना।
- प्रतिरोधी मनुष्यों एवं पशुओं के सीधे संपर्क में रहना।
- दवाइयों का कोर्स पूर्ण होने से पहले ही इनका उपयोग बंद कर देना।
- किसान भाइयों में एंटीबॉयोटिक्स के उपयोग के प्रति जागरूकता का अभाव होना।
- विषाणुजनित रोगों में एंटीबॉयोटिक्स का उपयोग करना।

प्रतिजैविक औषधी प्रतिरोधकता को एहतियाती उपायों को अपनाकर कम किया जा सकता है –

- पशुओं का सही समय पर टीकाकरण करवायें।
- संक्रमित एवं बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें।
- पुरानी बची हुई दवाइयों का उपयोग न करें, उन्हें फैंक दें।
- पशुओं के मल, मूत्र एवं दूध की समय–समय पर जांच करवाएं।
- प्रतिजैविक दवाइयों (एंटीबायोटिक) का उपयोग तभी करें जब इनकी आवश्यकता हो।
- किसान भाई बीमार पशु के अच्छे इलाज के लिए पंजीकृत पशुचिकित्सक से ही इलाज करवायें।
- जब तक पर्चियों में लिखे अनुसार दवाइयों का पूरा कोर्स पूर्ण नहीं हो जाए, बीच में किसी भी कारणवश इलाज को न रोकें अन्यथा इससे सूक्ष्मजीवों में प्रतिरोधकता होने की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।
- एक ही एंटीबॉयोटिक का उपयोग बार–बार ना करें।
- किसान भाई इस बात की जानकारी अवश्य रखें कि उनके पशु कौनसी बीमारी से ग्रसित हैं एवं ईलाज के लिए कौनसी दवाइयां उपयोग में ली जा रही है और इस बीमारी के ईलाज के लिए इन दवाइयों का क्या उपयोग है।
- स्वच्छ पानी और भोजन (चारा) उपयोग में लें।
- स्वच्छ वातावरण प्रदान करें।
- किसान भाइयों को इन दवाइयों के उपयोग और इनसे होने वाले दुष्प्रभाव के प्रति जागरूक करें एवं उन्हें शिक्षित करें।
- विभिन्न संस्थाओं द्वारा पशुओं में प्रतिजैविक प्रतिरोधकता को रोकने और कम करने के लिए आयोजित कार्यक्रमों में भाग अवश्य लें।

–डॉ. एल.एन. सांखला (सहायक आचार्य)
डॉ. ममता मीणा, डॉ. नीलम दिनोदिया
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पंचगव्य उत्पादः गौसंवर्द्धन और पशुपालकों की आय वृद्धि में सहायक हैं

हमारे राज्य में, उन्नीसवीं पशु गणना 2012 के आंकड़ों के अनुसार, एक करोड़ सोलह लाख से अधिक देशी गौवंश हैं और ये राज्य के कुल गौवंश का सत्तासी प्रतिशत है। राज्य के इस गौवंश का पशुपालन एवं दुग्ध उत्पादन में महत्ती योगदान है। श्वेत–क्रांति एवं उसके बाद के दशकों में देश में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने की होड़ लगी और विदेशी गायों की तरफ आकर्षण बढ़ गया। किन्तु राजस्थान की शुष्क जलवायु, पानी की कमी, अनावृष्टि और चारे की कमी को सहन करने की क्षमता इन विदेशी और संकर नस्लों में भारी कमी पायी गयी। साथ ही देशी नस्लों के उन्नतीकरण से ज्ञात हुआ कि अगर उचित रख–रखाव किया जाए तो गीर, थारपारकर जैसे देशी गौवंश राजस्थान की जलवायु में काफी अच्छा दुग्ध उत्पादन दे सकते हैं और विषम परिस्थिति को भी सहन कर सकते हैं अतः अब फिर से देशी गायों की नस्ल सुधार और संवर्द्धन पर काम होने लगा है। राजस्थान में देशी गाय की मुख्यतः आठ नस्लें हैं। हरियाणवी, राठी, थारपारकर, कांकरेज, गीर, नागौरी, साहीवाल, मालवी नस्लें राज्य के विभिन्न जिलों की जलवायु के अनुसार पाली जाती हैं।

देशी गौवंश में दूध उत्पादन के अतिरिक्त पंचगव्य उत्पादन से भी अतिरिक्त आय हो सकती है और अनेक प्रगतिशील और पंजीकृत गौशालाओं में ऐसा किया भी जा रहा है। संस्कृत में गाय से प्राप्त पदार्थ 'गव्य' कहलाते हैं और ये पांच पदार्थ हैं – गौदुग्ध (देशी गाय का दूध), गौदधि (देशी गाय का दही), गौघृत(देशी गाय का घी), गौमूत्र (देशी गाय का मूत्र) और गोमय (देशी गाय का गोबर)। इनमें से गौमूत्र और गोमय हमें अनुत्पादक देशी गौवंश से भी नियमित रूप से प्राप्त होते रहते हैं। अगर इन गव्य पदार्थों का पंचगव्य उत्पाद निर्माण में उपयोग करें तो वे पशु जो दूध उत्पादन नहीं कर रहे उनसे भी पशुपालक अपनी आय में अभिवृद्धि करके उनका ठीक से रख–रखाव आसानी से कर सकते हैं।

गोमय और गौमूत्र से बनाएं पंचगव्य जैविक खाद –

अपने औषधीय गुणों की वजह से पंचगव्य उत्पादों का चिकित्सा के अतिरिक्त कृषि, खासकर जैविक खेती में जैव–उर्वरक, जैव–कीटनाशक और जैविक खाद के रूप में भी सफलतापूर्वक उपयोग किया जा रहा है। रासायनिक उर्वरकों का कृषि भूमि और खाद्यान्नों पर दुष्प्रभावों को देखते हुए आजकल ऑर्गेनिक/जैविक खेती को उत्तम माना जा रहा है और इसमें पंचगव्य खाद (गोमय और गोमूत्र से बनी खाद) एक बेहतरीन जैव–उर्वरक सिद्ध हुई है। इससे फसल को प्रचुर मात्रा में नाइट्रोजन उपलब्ध होती है। स्थानीय संसाधनों से तैयार यह खाद बनाने में आसान है और लागत न के बराबर है। ये खाद भूमि में मित्र जीवाणुओं की संख्या बढ़ा कर जमीन को अधिक उपजाऊ बनाती है और उत्पादन भी बढ़ता है। इस प्रकार से जैविक खाद से फसल की गुणवत्ता में वृद्धि होती है और महँगी रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होती है।

पंचगव्य खाद बनाने के लिए जरूरत की सामग्री और व्यवस्था –

देशी गाय का ताजा गौमूत्र–15 लीटर।

देशी गाय का ताजा गोबर–15 किलोग्राम।

गुड़–250 ग्राम।

पानी–15 लीटर।

प्लास्टिक का पात्र/मटका– एक

पंचगव्य खाद बनाने की विधि–

- 15 लीटर पानी में 250 ग्राम गुड़ मिलाकर इसका घोल बना लें।
- पात्र/मटके में गौमूत्र डाल कर हिला दीजिये। मटके में 5 लीटर गौमूत्र, 5 किलो गाय का गोबर और एक तिहाई गुड़ का घोल मिला दीजिये और एक लकड़ी/डंडे की सहायता से दो मिनट तक सीधा व फिर उलटा घुमाइये। इस क्रम को दो बार कर के घोल अच्छी तरह मिला दीजिये।
- खाद बनाने के लिए ताजा गौमूत्र काम में लेवें, 7 दिन से ज्यादा पुराना गौमूत्र खाद बनाने में उपयोग नहीं करना चाहिए।
- कुछ देर बाद दुबारा 5 मिनट तक डण्डे से घुमाइये।
- इसके बाद घड़े का मुँह बंद कर दीजिये और ढक्कन को गोबर व मिट्टी से लीप दीजिये और 7–10 दिन तक छाया में रखें। खाद तैयार हो जायेगी।
- फिर 200 लीटर का ड्रम लेकर 150 लीटर पानी भरकर यह मटका खाद उसमें मिला कर 30 मिनट तक घुमायें और तैयार खाद का छिड़काव करें।

खाद की प्रयोग विधि एवं मुख्य सावधानियां –

- 1 बीघा खेत में 30 लीटर मटका खाद 200 लीटर पानी में मिला कर फसल में जड़ों के पास छिड़काव करें। पहला छिड़काव बुआई से दो दिन पहले व दूसरा बुआई के दो माह बाद तथा तीसरा छिड़काव फूल आने से पहले करें।
- अनाज वाली फसलों में – बुआई के 25 दिन, 50 दिन, व 70 दिन पर पानी में मिला कर छिड़काव करें।
- खाद का छिड़काव करते समय खेत में नमी का होना आवश्यक है।
- मटका खाद तैयार होने पर दो–तीन दिन में ही इसको काम में ले लें।

राजस्थान में गौसंवर्द्धन एवं पंचगव्य के प्रोत्साहन, तथा इसमें अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए राजस्थान सरकार ने 2014 में पशुपालन विभाग से पृथक गोपालन विभाग का गठन किया है। वर्तमान में श्री ओटाराम देवासी माननीय राज्यमंत्री के रूप में गोपालन विभाग का प्रभार निर्वहन कर रहे हैं। इस विभाग द्वारा राज्य सरकार ने बीते सालों में अनेक नई गौशालाओं का पंजीकरण किया है जो एक बड़ी उपलब्धि है। वर्तमान में राजस्थान में 1300 से अधिक पंजीकृत गौशालाएं हैं। निदेशालय गोपालन विभाग द्वारा अन्य कई योजनाओं को जारी किया गया है। जिले की एक सर्वश्रेष्ठ गौशाला के लिए 26 जनवरी को जिला स्तरीय समारोह में 10,000/– (दस हजार रूपए) का नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति–पत्र देकर सम्मानित किया जाता है। इसमें पंचगव्य आधारित उत्पाद बनाने एवं विपणन करने वाली और अपना खर्च स्वयं वहन करने में सक्षम गौशालाओं को विशेष रूप से चयन में महत्व दिया जाता है। इसके अतिरिक्त राज्य सरकार गौशालाओं में एवं ग्रामीण क्षेत्र के गोपालकों को बायोगैस/गोबर गैस संयंत्र निर्माण के लिए अधिकतम 52,000 रूपये तक का अनुदान देती है जिसका क्रियान्वयन राज्य में ग्रामीण विकास विभाग के माध्यम से किया जा रहा है।

–प्रो. ए.पी. सिंह , डॉ. अशोक गौड़ व डॉ. प्रतिष्ठा शर्मा
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर (मो. 94141–39188)

गर्मियों में मुर्गियों के स्वास्थ्य की देखभाल कैसे करें !

इस वर्ष अप्रैल माह शुरु होते ही गर्मी ने अपने तेवर दिखाना प्रारंभ कर दिए हैं और संभावना है कि मई माह में और भी ज्यादा गर्मी होगी। गर्मी में सबसे ज्यादा पक्षी प्रभावित होते हैं। अंडे देने वाली मुर्गियों के उत्पादन में कमी हो जाती है और यदि तेज गर्म हवाएं सीधी मुर्गी घर में आती है तो मुर्गियां निर्जलीकरण और तापघात की शिकार हो जाती हैं। लू (तापघात) से प्रभावित मुर्गी के शरीर का तापमान बहुत ज्यादा बढ़ जाता है, सुस्त हो जाती है, लंगड़ाकर चलती है, प्यास बढ़ जाती है, भूख नहीं लगती, उसे श्वांस लेने में तकलीफ होती है और मुंह खोलकर श्वांस लेती हैं, अपने पंख फैला लेती है तथा अंत में श्वसन प्रक्रिया रूकने से मृत्यु तक हो जाती है। यदि मुर्गी घर में गर्मी के साथ उमस भी है तो 'हीट स्ट्रेस' से मुर्गियों की मृत्यु आम समस्या है। गर्मियों में मुर्गियों में तापघात, निर्जलीकरण व 'हीट स्ट्रेस' एक बहुत बड़ी समस्या है। अतः मुर्गी पालकों को गर्मी की शुरुआत से ही मुर्गियों के उचित व अच्छे प्रबंधन के बारे में सोचना चाहिए। यदि गर्मी में एक साथ बहुत अधिक संख्या में पक्षियों की मृत्यु हो रही है तो तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

गर्मी से बचाव के उपाय एवं प्रबंधन –

1. गर्मी के समय मुर्गियों को खुले में न छोड़ें और उन्हें ठंडे व छायादार मुर्गीघर में ही रखें। मुर्गियों को दिन में कई बार ठंड़ा पानी पिलाना चाहिए। मुर्गियों को ऐसे घरों में रखना चाहिए जहां पर समुचित प्रकाश आये तथा हवा का आसानी से आवागमन हो।
3. मुर्गीघर में बहुत अधिक संख्या में मुर्गियां नहीं छोड़नी चाहिए।
4. तेज गर्मी के समय मुर्गियों के बाड़े में न घुसें ताकि उन्हें इधर–उधर भागने से बचाया जा सके।

मुर्गीघर में ठंड़क रखने के लिये खिड़कियों में गीली पल्ली लगाएं व हवा का आदान–प्रदान सुनिश्चित करें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

देशी मुर्गों की नस्ल को जानें

खुली गर्दन वाला मुर्गा

खुली गर्दन अपेक्षाकृत बड़ा तथा लंबे बेलनाकार गर्दन वाला मुर्गा है– जैसा कि नाम दर्शाता है, पक्षियों की गर्दन पूरी तरह से नग्न होती है, केवल पंख का एक गुच्छ खाने की थैली के ऊपर गर्दन के सामने देखा जाता है। जिसके परिणामस्वरूप नर्म त्वचा विशेष रूप से नर में लाल हो जाती है क्योंकि वे यौन परिपक्वता से संबंधित है। शरीर पर पंखों की मात्रा भी कम होती है। त्वचा पतली और गुलाबी रंग की होती है। कम पंख होने के कारण पक्षी उष्णकटिबंधीय तनाव को सहन करने में सक्षम हैं। यह चिकन की सभी भारतीय देशी नस्लों में सबसे बड़े आकार का अंडे देता है। केरल के त्रिवेन्द्रम क्षेत्र को नग्न गर्दन मुर्गे की जननी माना जाता है, लेकिन यह गर्म और आर्द्र तटीय क्षेत्र में उपलब्ध है जिसमें अंडमान और निकोबार द्वीप और देश के पूर्वोत्तर राज्य शामिल हैं।

नेकेड नैक की सामान्य विशिष्टताएं

1. 20 हफ्तों में वजन : 1005 ग्राम, 2. यौन परिपक्वता पर आयु : 201 दिन
3. वार्षिक अंडा उत्पादन : 99 अंडे 4. 40 हफ्तों में अंडे का वजन : 54 ग्राम

कुक्कुट के पौष्टिक तत्वों की कमी से होने वाले रोग : बचाव व उपचार

व्यावसायिक कुक्कुटपालन में प्रत्येक कुक्कुट पालक को पौष्टिक तत्वों की कमी से होने वाले कुक्कुट रोग सम्बन्धी जानकारी, बचाव के उपाय तथा उपचार की जानकारी होना आवश्यक है।

पौष्टिक तत्वों की गड़बड़ी के कारण होने वाली बीमारियां :

(क) विटामिन ए की कमी : यह रोग आहार में विटामिन–ए की कमी से होता है। सभी आयु के पक्षी इस रोग के शिकार हो सकते हैं।

मुख्य लक्षण : शारीरिक विकास में कमी 2. आंखों में सूजन 3. अण्डा उत्पादन में कमी

उपचार : तरल विटामिन–ए 10 मि.ली. प्रति 100 चूजों के हिसाब से सुबह के पानी में सात दिन तक देवें।

बचाव : पीली मक्का दाने में देनी चाहिये तथा संतुलित आहार में प्रचुर मात्रा में विटामिन–खनिज मिश्रण मिलाना चाहिए।

(ख) कर्ल टो पैरालिसिस : यह रोग विटामिन–बी–2 (राइबोफ्लेविन) की कमी से होता है तथा अधिकांशतः छोटे उम्र के पक्षियों में पाया जाता है।

मुख्य लक्षण : पक्षी सिर झुकाकर बैठ जाता है व पंख ढीले पड़ जाते हैं। कुछ पक्षियों के पंखों में लकवा हो जाता है तथा पंजे अन्दर की तरफ मुड़ जाते हैं। पक्षी घुटने टेक कर चलते हैं। शारीरिक विकास में कमी। अण्डा उत्पादन में कमी।

उपचार : विटामिन बी–कॉम्पलैक्स 20 मि.ली. 100 पक्षियों के हिसाब से पानी में 7 दिन तक। जिन पक्षियों के पंजों में लकवा हो जाता है, उनका उपचार सम्भव नहीं है।

बचाव : रोग से बचाव हेतु विटामिन, खनिज, मिश्रण, उत्पादक द्वारा निर्धारित मापदण्ड के अनुसार दाने में मिलाना चाहिये,

(ग) रिकेट्स : यह रोग साधारण कैल्शियम व फॉस्फोरस की कमी से छोटे उम्र के पक्षियों में पाया जाता है।

मुख्य लक्षण : पैरों की हड्डियां टेढ़ी हो जाती है। शारीरिक विकास दर में कमी। पक्षियों का डगमगा कर चलना।

उपचार :– हड्डियों एवं ओइस्टर शैल (शींप) के स्त्रोत का कैल्शियम दाने में मिला कर देना चाहिये।

(घ) ओस्टोमलेशिया : यह रोग कैल्शियम की कमी से होता है जो कि वयस्क पक्षियों में होता है। इससे पक्षियों की हड्डियां कमजोर हो जाती हैं।

मुख्य लक्षण : पक्षी को चलने में थकावट महसूस होती है। अण्डे का छिल्का कमजोर पड़ जाता है।

उपचार एवं बचाव : दाने में प्रचुर मात्रा में आवश्यकतानुसार कैल्शियम (ग्रिट) मिलाना चाहिय।

(च) फैटी लीवर सिनड्रोम : यह रोग वयस्क पक्षियों में पाया जाता है, जो की गर्मी के मौसम में अधिक मात्रा में घुलनशील कार्बोहाड्रेट के उपयोग से होता है। यह शरीर में उत्पन्न आवश्यकता से अधिक उर्जा बनने पर यकृत (लीवर) ऊर्जा को वसा में तब्दील करता है। गर्मी में लगातार अधिक मात्रा में घुनलशील कार्बोहाइड्रेट के सेवन से लीवर कमजोर पड़ जाता है।

मुख्य लक्षण : लीवर कमजोर व रंग में हल्का पड़ जाता है तथा आकार बढ़ जाता है। लीवर फट जाता है तथा आस–पास खून जमा हो जाता है।

उपचार : विटामिन–ई दाने में मिलाकर देना चाहिये। लीवर टॉनिक देना चाहिए।

बचाव : दाने में घुलनशील कार्बोहाड्रेट की मात्रा घटाकर रेशेदार कार्बोहाइड्रेट शामिल करना चाहिए।

–डॉ. सुदीप सोलंकी,
सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, नवानियां (उदयपुर)

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–मई, 2018

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँहपका एवं खुरपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	भरतपुर, दौसा, बाँसवाड़ा, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनू, सवाई–माधोपुर, धौलपुर, चूरू, अजमेर, बीकानेर, हनुमानगढ़, अलवर
पी.पी.आर. रोग	बकरी	सवाई–माधोपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, पाली, सिरोही, जयपुर, चूरू
गलघोंटू (इन दिनों वर्षा के साथ)	भैंस, गाय	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई–माधोपुर, भीलवाड़ा, सीकर, चित्तौड़गढ़, राजसमन्द, पाली, बून्दी, झुंझुनू, टोंक, हनुमानगढ़, कोटा, बारां
ठप्पा रोग	गाय, भैंस	जयपुर, हनुमानगढ़, बीकानेर, जैसलमेर, राजसमन्द, पाली, चित्तौडगढ, सीकर
बॉटूलिज्म	गाय	जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, बाड़मेर
न्यूमोनिक पास्चुरेलोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	अलवर, टोंक, जयपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, जालौर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, बीकानेर, कोटा, श्रीगंगानगर, धौलपुर, हनुमानगढ़, भीलवाड़ा
सर्रा रोग	भैंस, ऊँट	धौलपुर, बाँसवाड़ा, हनुमानगढ़, बून्दी, अनूपगढ़, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, भरतपुर
अन्तः परजीवी– गोलकृमि, पर्णकृमि	गाय, भैंस, भेड़, बकरी,	बून्दी, चित्तौडगढ़, बाँसवाड़ा, धौलपुर, बीकानेर, कोटा, श्रीगंगानगर, बारां, हनुमानगढ
खुजली	ऊँट, भेड़, बकरी	झुंझुनू, बीकानेर, श्रीगंगानगर, जैसलमेर, टोंक, जयपुर, अलवर, बाड़मेर
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्शियस ब्रोंकाइटिस	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
तापघात व निर्जलीकरण	सभी पशु–पक्षी	समस्त राजस्थान

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर। फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

सफलता की कहानी — इन्द्राज बने बेरोजगारों के प्रेरणा स्त्रोत

बीकानेर जिले की लूणकरनसर तहसील के उदेशिया ग्राम के 49 वर्षीय इन्द्राज पुत्र श्री ओम प्रकाश धतरवाल युवाओं के लिए एक नयी मिसाल बनकर उभरे हैं। इन्द्राज के पास कृषि योग्य भूमि नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी परन्तु इन्होंने इधर–उधर भटकने की बजाय स्वयं का व्यवसाय शुरू करने की ठान ली। इन्द्राज ने इसके लिए पशुपालन व्यवसाय को आधुनिक वैज्ञानिक तौर–तरीकों से करने की सोची। पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी हेतु पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र लूणकरनसर द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में भाग लिया। इन प्रशिक्षणों से इन्द्राज के दिमाग में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। प्रशिक्षणों के दौरान पशुओं में नस्ल सुधार द्वारा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि, अजोला घास की उपयोगिता, कृमि नाशक दवा का उपयोग, खनिज लवणमिश्रण की उपयोगिता, कृत्रिम गर्भाधान, ग्याभिन पशुओं की देखभाल आदि की वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त कर उसे अपनाया और एक सफल पशुपालक बने। वर्तमान में इनके पास राठी व साहीवाल नस्ल की 8 गाय, 2 वयस्क मादा पशु, 6 बछड़े–बछड़ियां हैं। इनसे लगभग प्रतिदिन 50 लीटर दुग्ध उत्पादन करते हैं। इनकी पशुपालन से वार्षिक आय 3.5 लाख रूपये तक हो जाती है। इन्द्राज आज की युवा पीढ़ी के लिए एक मिसाल बने हैं जो प्रेरणादायक है।

(सम्पर्क – इन्द्राज मो. 8003231156)

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

पौष्टिक हरा चारा 'अजोला' का उत्पादन उपयोगी है

प्रिय, किसान और पशुपालक भाईयो और बहनों।

गर्मी के मौसम के साथ ही हरे चारे की उपलब्धता में कमी और दाने–चारे के भावों में वृद्धि संभावित है। ऐसी स्थिति में हरे चारे की कमी की पूर्ति के लिए एक आहार के रूप में अजोला हमारे लिए एक सरल और अत्यंत उपयोगी विकल्प के रूप में मौजूद है। अजोला उत्पादन की तकनीक से कम लागत तथा थोड़ी सी मेहनत से पौष्टिक तत्वों से भरपूर हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है। अजोला जल सतह पर तैरने वाली जलीय फर्न है जो प्रोटीन आवश्यक अमीनो अम्ल, विटामिन व पौष्टिक तत्वों से भरपूर है। अजोला की विशेषता है कि अनुकूल वातावरण में पांच दिनों में दो गुणा हो जाती है। यह गाय, भैंस, मुर्गी, भेड़, बकरियों के लिए एक आदर्श हरा चारा है। दुधारू पशुओं को प्रतिदिन दो से ढ़ाई किलो ताजा अजोला बांटे के साथ में खिलाने से 15 प्रतिशत तक दुग्ध उत्पादन में वृद्धि दर्ज की गई है। अजोला का उत्पादन किसान भाई आस–पास खाली पड़ी जमीन के अलावा अपने घरों की छतों पर भी आसानी से कर सकते हैं। इसका उत्पादन 3 फुट चौड़ी, 10 फुट लम्बी व 1 फुट गहरी आकार की कच्ची क्यारी में पौलिथीन उसकी पूरी परिधि में बिछाकर किया जा सकता है। इन क्यारियों में 10 किलो ग्राम छनी हुई मिट्टी व 2 किलो गोबर खाद को मिलाकर प्रति क्यारी बिछा देना चाहिए और पानी भर दें। इस क्यारी में 0.5–1 किलोग्राम शुद्ध अजोला बीज (कल्चर) पानी पर एक समान फैला देना चाहिए। बीज फैलाने के तुरंत बाद अजोला के पौधों को सीधा करने के लिए अजोला पर ताजा पानी छिड़कना चाहिए। एक हफ्ते में अजोला पूरी क्यारी में फैल कर एक मोटी चादर जैसी बन जाती है। अजोला की तेज वृद्धि तथा 200 ग्राम प्रति वर्ग मीटर दैनिक पैदावार के लिए 5 दिनों में एक बार एक किलो गाय का गोबर मिलाया जाना चाहिए। अजोला को क्यारी से निकालने के लिए छलनी का उपयोग करना चाहिए। इस तकनीक को घर–आंगन में भी उपयोग में लाकर पूरे साल स्वास्थ्यवर्द्धक व दुग्ध उत्पादन बढ़ाने वाला हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है। जय हिन्द ! **–प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **मई, 2018** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**प्रो. हेमन्त दाधिच** **9351687945** कुलसचिव, राजुवास, बीकानेर	पशुपालकों के उत्थान हेतु प्रयास	03.05.2018
2	**प्रो. जे.एस. मेहता** **9414278372** निदेशक क्लिनिक्स, राजुवास, बीकानेर	दुग्ध उत्पादन में कृत्रिम गर्भाधान का योगदान	10.05.2018
3	**डॉ. अनिल कुमार बिश्नोई** **7073115386** पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण विभाग, सी.वी.ए.एस.	लंगड़ापन के विभिन्न कारण एवं निवारण	17.05.2018
4	**प्रो. उर्मिला पानू** **460226250** ए.बी.जी. विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	बदलते परिवेश में देशी पशुधन का महत्व और उनका संरक्षण	24.05.2018
5	**डॉ. पकंज थानवी** **9414217411** वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर	स्वच्छ दुग्ध उत्पादन	31.05.2018

मुस्कान !

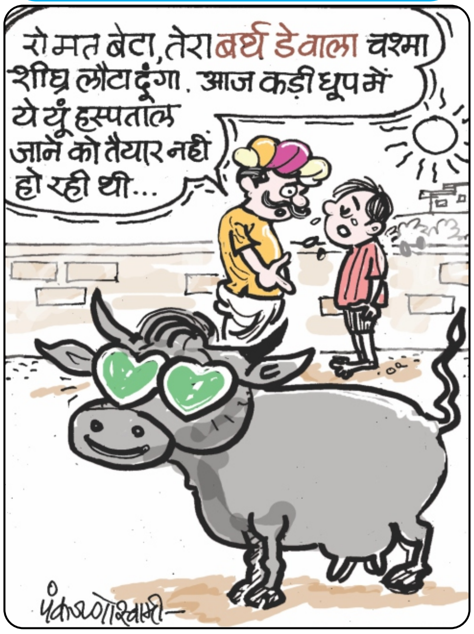

संपादक
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
डॉ. नीरज कुमार शर्मा
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। → 1800 180 6224